ओ३म्

युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

वैदिक सार्वदेशिक

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

वर्ष 8 अंक 20 16 से 22 मई, 2013 दयानन्दाब्द 190 सृष्टि सम्वत् 1960853114 सम्वत् 2070 वै. शु.-06

शुल्क :- एक प्रति 2 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

निर्धनता हर तरह से खराब

वरं वनं व्याघगजेन्द्रसेवितं, द्रुमालयः
पत्रफलाम्बु सेवनम्।
तृणेषु शय्या शतजीर्णवल्कलं, न बंधुमध्ये
धनहीनजीवनम्।।

व्याख्या : बड़े –बड़े हाथियों और बाघों वाले वन में वृक्ष का कोट रूपी घर अच्छा है, पके फलों को खाना, जल को पीना, तिनकों पर सोना, पेड़ों की छाल पहनना उत्तम है, परन्तु अपने भाई–बंधुओं के मध्य निर्धन होकर जीना अच्छा नहीं। यहां निर्धनता के अभिशाप और धन के महत्व को प्रकट करते हुए चाणक्य कहते हैं कि निर्धनता हर तरह से खराब है।

मांस, शराब छोड़ने से घटेंगे रेप के मामलेः अग्निवेश

नई दिल्ली।। सोशल वर्कर स्वामी अग्निवेश का मानना है कि लोग मांसाहार और शराब का सेवन छोड़ दें तो बलात्कार के मामलों में कमी आएगी। उन्होंने कहा, हम बलात्कार जैसे अपराध को सिर्फ पुलिस के जरिए नहीं रोक सकते। मेरा मानना है कि यदि लोग मांस खाना छोड़ दें, तो बलात्कार की घटनाओं में बेहद कमी आएगी। इस पर बहुत से अनुसंधान हुए हैं। यदि शराब का सेवन बंद हो जाए तो बलात्कार के मामलों में कमी होगी।

अग्निवेश ने कहा कि बहुत से अपराध और हादसे शराब पीने से होते हैं। शाकाहार के महत्व पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि जापानी साइंटिस्ट्स ने हाल में धरती के सबसे बुजुर्ग व्यक्ति पर एक अध्ययन किया और उन्होंने पाया कि वह शाकाहारी था। उन्होंने कहा, इस दुनिया में हर रिसर्च बताती है कि बकरे का मांस सभी बीमारियों की जड़ है।

अग्निवेश ने कहा कि पिछले साल 16 दिसंबर की रात दिल्ली में चलती बस में एक लड़की से गैंगरेप के सभी छह आरोपी शराब पीए हुए थे और यहां तक कि हाल ही में पांच वर्षीय बच्ची से बलात्कार करने के आरोपियों ने भी शराब पी रखी थी। उन्होंने कहा, दोनों मामलों में आरोपियों ने शराब पी रखी थी। इससे साफ होता है कि शराब की वजह से उन्होंने अपराध किया। शराब आदमी की नैतिक सोच को खत्म कर देती है।

अग्निवेश ने कहा, सरकार शराब उत्पादन बंद नहीं कर रही, क्योंकि इससे राजस्व मिलता है। सभी राज्यों में अब शराब उत्पादन के मामले में एक–दूसरे से आगे निकलने की होड़ शुरू हो गई है। यह एक चलन बन गया है। इस तथ्य पर चिंता जताते हुए उन्होंने कहा कि हर रोज एक अरब पशुओं का वध किया जाता है, जिसके गंभीर परिणाम होंगे।

जन–जागरण से समाप्त होगा राजनीतिक भ्रष्टाचार

देश को जात–पात, भ्रष्टाचार व शराब से मुक्ति दिलाने के लिए

स्वामी अग्निवेश जी ने सितावदियारा से प्रारम्भ की ग्राम जागरण यात्रा

युवाओं तथा छात्रों में दिखा अभूतपूर्व उत्साह

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त समाज सेवी, बंधुआ मुक्ति मोर्चा के प्रणेता तथा आर्य समाज के सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी अग्निवेश जी ने नशाखोरी, भ्रष्टाचार, मंहगाई, गरीबी, बेरोजगारी तथा नशाखोरी से मुकाबला करना होगा। स्वामी जी ने कहा कि जनता के सामने इसके अतिरिक्त और कोई रास्ता नहीं बचा है। उन्होंने कहा कि मैं पूरी दुनियां में मोहब्बत का पैगाम देता हूँ, मेरी कोई जाति नहीं है, मैं मानव हूँ और मानवता का पैगाम देता हूँ। भारत–पाकिस्तान के विगड़ते रिश्तों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि भारत व पाकिस्तान के बीच युद्ध के लिए मैदान तैयार करने वाले दोनों देशों के राजनेता है दोनों देशों की जनता तो एक दूसरे से काफी प्यार करती है। देश की आज जो दयनीय हालत है उसके पीछे हमारे जन प्रतिनिधि जिम्मेदार है उन्होंने कहा कि अब देश में राष्ट्रीय सरकार के गठन की आवश्यकता है तथा राजनीतिक भ्रष्टाचार का खात्मा बिना जन जागरण के नहीं होगा।

स्वामी अग्निवेश जी ने भारी संख्या में उपस्थित छात्रों व युवाओं का आह्वान करते हुए कहा कि वे हर प्रकार के नशे से दूर रहे तथा सकारात्मक कार्यों में अपनी ऊर्जा लगाये। उन्होंने कहा कि यदि युवा अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए उठ खड़े हो तो देश में क्रान्ति लाई जा सकती है। महिलाओं पर हो रहे अमानवीय घटनाओं की चर्चा करते हुए स्वामी जी ने कहा कि देश में पहले नारियों की पूजा की जाती थी शास्त्रों में कहा गया कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" अर्थात् जहाँ नारियों की पूजा की जाती है वहाँ देवता निवास करते हैं उन्होंने कहा कि कहने को तो हम इक्कीसवी सदी में जी रहे हैं लेकिन आज नारियों की स्थिति अत्यन्त शोचनीय है। उन्होंने आह्वान किया कि महिलाओं का सम्मान किया जाना चाहिए तथा हर फैसले में महिलाओं की भागीदारी होनी चाहिए। स्वामी जी ने कहा कि दुनियां की आधी आबादी का विशेष ध्यान रखने से ही देश आगे बढ़ेगा और सभ्य, सुसंस्कृत और विकसित समाज की कल्पना की जा सकती है।

भ्रष्टाचार, मंहगाई, बेरोजगारी तथा जात–पात के विरूद्ध हजारों लोगों की उपस्थिति में मंगलवार को ग्राम जागरण यात्रा का प्रारम्भ किया। विश्व मानव जागरण मंच के तत्वावधान में विश्वविख्यात समाज सुधारक श्री जय प्रकाश नारायण की जन्मस्थली सिताबदियारा से इस जागरण यात्रा का प्रारम्भ किया गया। इस यात्रा का जिले के विभिन्न स्थानों पर भारी जन समूह ने अभूतपूर्व स्वागत किया तथा स्वामी अग्निवेश जी को फूल–मालाओं से लाद दिया। शहर के नगर पालिका चौक पर आयोजित जन सभा को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने कहा कि देश में यदि अमन चैन लाना है और सही मायने में लोकतन्त्र स्थापित करना है तो आम जनता को प्रत्यक्ष प्रजातन्त्र को ही कारगर हथियार बनाना होगा। उन्हें ग्राम स्तर पर शान्ति सेना गठित कर देश में व्याप्त

शेष पृष्ट 7 पर

सम्पादक
प्रो. कैलाशनाथ सिंह

जलवायु परिवर्तन में निहित खतरे

– डॉ. विशेश्वर मिश्र

जो हमें विस्मित तो करती ही है, साथ ही प्रथम दृष्टि में कुछ समझ में नहीं आता है कि यह सब क्यों हो रहा है?गहराई से चिन्तन करने पर यह आभास होता है कि संभवतः यह जलवायु परिवर्तन के परिणाम हैं। जलवायु परिवर्तन का तात्पर्य पृथ्वी के मौसम में बदलाव से है जिसमें तापमान, पवन और वर्षा के प्रारूप में परिवर्तन शामिल है, जो कुछ विशिष्ट गैसों कार्बनडाई ऑक्साइड, मिथेन, नाइट्रस आक्साइड आदि की अधिक मात्रा होने के कारण वायुमंडलीय तापमान में बढ़ोतरी होती है जिसकी वजह से अन्य परिवर्तन प्रभावित होते हैं।

एशियन डेवलपमेंट बैंक के अनुमान के अनुसार विगत एक दशक में दुनिया के चार देश–भारत, बांग्लादेश, फिलीपींस और वियतनाम, प्राकृतिक आपदाओं के कारण लगभग 20 अरब अमेरिकी डॉलर का नुकसान उठा चुके हैं और आगे आने वाले समय में, यदि समय रहते हुए कुछ कारगर कदम नहीं उठाए गए तो यह नुकसान लगातार बढ़ता ही जायेगा। विगत दो दशकों से अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ने यह स्वीकार करना प्रारम्भ कर दिया है कि जलवायु में परिवर्तन आ रहे हैं और लगातार इस बात पर जोर दिया जा रहा है कि 'ग्रीन हाउस' गैसों के प्रतिशत ह । रूप से की वृद्धि प्राकृतिक पृथ्वी के वायुमंडल में ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा मात्र एक प्रतिशत ही है जो शीशे की परत की तरह कार्य करते हुए तापमान को बाहर नहीं जाने देती है। ग्रीन हाउस गैसों में और बढ़ोतरी का अर्थ है बढ़ता हुआ वैश्विक तापमान। ग्रीन हाउस गैसें कार्बनडाई ऑक्साईड, मिथेन और नाइट्रस आक्साइड कोयला, तेल और प्राकृतिक गैसों को जलाने से, कृषि में प्रयुक्त रसायनों एवं औद्योगिक प्रदूषण से उत्पन्न होती है। लगातार घटते जा रहे हरित क्षेत्र स्थिति को बद से बदतर बनाते जा रहे हैं। ऐसा आकलन किया गया है कि औद्योगिक विकास के पूर्व कार्बनडाई ऑक्साइड 278 भाग प्रति दस लाख था, जो अब 380 हो चुका है। यह लगातार 315 प्रतिशत की दर से प्रतिवर्ष बढ़ता जा रहा है। इसकी बढ़ोतरी का अर्थ है बढ़ते हुए खतरे।

> "जलवायु परिवर्तन का तात्पर्य पृथ्वी के मौसम में बदलाव से है जिसमें तापमान, पवन और वर्षा के प्रारूप में परिवर्तन शामिल है। दुनिया में सबसे अधिक वर्षा वाले स्थान के रूप में विख्यात चेरापूंजी में सूखा पड़ना, थार मरुस्थल युक्त शुष्क प्रदेश राजस्थान में बाढ़ का आना, भारत के मैदानी भाग में बर्फबारी एवं बेमौसम बरसात और ओले पड़ना, हिमनदियों और भूगर्भीय जलस्तर का तेजी से घटते जाना आदि कुछ ऐसी"

कहने की आवश्यकता नहीं है कि जलवायु परिवर्तन का स्वास्थ्य, ऊर्जा के स्रोतों और खाद्य उत्पादन व्यवस्था पर भयावह प्रतिकूल प्रभाव होगा। पहले से गरीबी और अभाव में जीवन यापन कर रहे लोगों पर इसका और भी अधिक गंभीर और बुरा प्रभाव होगा। नैतिकता के आधार पर यह वैश्विक न्याय की चिंता का एक विषय है कि वे लोग जिन्होंने पर्यावरण प्रदूषण के लिए कुछ भी नहीं किया या कम से कम किया, वे इसके सबसे अधिक बुरी तरह प्रभावित होंगे।

जलवायु परिवर्तन के दृष्टिगत दुष्प्रभावों की चर्चा की जाए तो यह एक स्थापित तथ्य है कि समुद्र तल में 10 से 20 सेंटीमीटर की बढ़ोतरी हो चुकी है और यहद यह इसी गति से बढ़ता रहा तो अंदमान निकोबार, मारिशस, मालदीव, इंडोनेशिया और फिलीपींस के बहुत से निम्नस्तरीय द्वीप दुनिया के मानचित्र से सदा–सदा के लिए गायब हो जायेंगे। ग्लोबल ह्यूमेनिटेरियन फोरम के अनुमान के अनुसार जलवायु परिवर्तन के प्रतिकूल प्रभावों के कारण प्रतिवर्ष दुनिया में लगभग तीन लाख लोग मर जाते हैं। इसमें बीमारियों एवं कुपोषण के कारण होने वाली मौतें भी शामिल हैं। इसके अतिरिक्त करीब 33 लाख लोग किसी न किसी प्रकार से प्रभावित होते हैं तथा लगभग चार अरब लोगों का जीवन खतरे में है और इनमें से 98 प्रतिशत लोग विकासशील देशों में रहने वाले हैं। यदि इस दृष्टि से भारत पर एक विहंगम दृष्टि डाली जाए तो भारत के योजना आयोग के पर्यावरण एवं वन प्रकोष्ठ के अन्तर्गत जलवायु परिवर्तन की चर्चा की गई है। इस प्रकोष्ठ के अनुसार भारत का लगभग 60 प्रतिशत भूभाग भूकंप, आठ प्रतिशत बाढ़ और 68 प्रतिशत सूखे की संभावना वाला है। इसी प्रकार कुल 7500 किलोमीटर लंबे समुद्र तट में से 5700 किलोमीटर ऐसा है जहाँ तूफान की आशंका बनी रहती है। अतः भारत जैसे विकासशील राष्ट्र के लिए आवश्यक हो जाता है कि इस दिशा में जितना शीघ्र हो सके सकारात्मक कदम उठाए, अन्यथा इसकी बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ सकती है। ज्ञातव्य है कि भारत एक कृषि प्रधान देश है और यहाँ की अर्थव्यवस्था में कृषि का प्रमुख स्थान है। अक्सर यह कहा जाता है कि भारतीय कृषि मानसून के साथ जुआ है और मानसून के बदले हुए मिजाज का इस पर क्या असर होगा इसे आसानी से समझा जा सकता है। भारत जैसे विशाल क्षेत्रफल एवं जनसंख्या वाले राष्ट्र में सबसे बड़ी चुनौती जनसामान्य के चेतना जागरण से जुड़ी है। आम लोगों को यह बात समझनी होगी कि प्राकृतिक संपदाओं विशेषकर जल, वन, कोयला, पेट्रोल आदि का प्रयोग बुद्धिमतापूर्ण तरीके से करना होगा, अन्यथा आने वाला समय बहुत कष्टकारक हो जायेगा। चूँकि भारत एक कृषि प्रधान देश है और जैविक कृषि की समृद्ध विरासत इसके पास है, अतः कृषि में रसायनों के प्रयोग में धीरे–धीरे कमी लाने की आवश्यकता है। ऊर्जा की समस्या से हम पहले से ही जूझ रहे हैं और बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए पर्याप्त ऊर्जा उपलब्ध करा पाना एक चुनौती बनी हुई है। इस चुनौती को दृष्टिगत रखकर बड़े पैमाने पर गैर–परम्परागत स्रोतों से ऊर्जा उत्पादन की योजना बनाकर उस पर अमल करने की आवश्यकता है। जलवायु परिवर्तन के मसले को लेकर दुनिया भर में बहस चल रही है। विकासशील राष्ट्रों का मानना है कि औद्योगिक दृष्टि से विकसित राष्ट्रों ने पर्यावरण को अधिक प्रदूषित किया है, इसलिए इसकी भरपाई उन्हें ही करनी पड़ती तथा साथ ही ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कमी लानी होगी। इसमें प्रमुख रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोपीय देश और जापान शामिल हैं। इसी प्रकार विकसित राष्ट्र चाहते हैं कि यह एक साझा दायित्व है, अतः सभी राष्ट्रों को समान रूप से इस दिशा में कार्य करना चाहिए। भारत जैसे विकासशील देश अपनी औद्योगिक गतिविधियों पर रोक लगाने में असमर्थ है परन्तु यदि विकसित राष्ट्रों से स्वच्छ एवं समक्षम तकनीक सस्ते दर पर उपलब्ध हो जाए तो कुछ हद तक ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कटौती की जा सकती है।

उत्सर्जन को कैसे कम किया जाये तथा जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभाव से बचने के लिए कारगर कार्यनीति कैसे लागू की जाये। आमतौर पर वैश्विक तापमान में एक–दो अंश सेंटीग्रेड की वृद्धि बहुत सामान्य प्रतीत होती है। विगत 100 वर्षों में यह वृद्धि मात्र 01740 सेंटीग्रेड रही है। सत्तर के दशक में वैश्विक तापमान 140 सेंटीग्रेट था और 20 सेंटीग्रेट वृद्धि का अर्थ 14

उत्तम मार्ग पर चलने का सरल उपाय

'सन्मार्ग दर्शन'

लेखक – स्वामी सर्वदानन्द

सन्मार्ग दर्शन में आठ गति है। 1. नाम गति, 2. अर्थगति, 3. शरीर गति, 4. जीवगति, 5. संसारगति, 6. सामान्य गति, 7. सरलगति, 8. मान्यमति गति इनके अवान्तर अनेक भेद हैं, उनका दर्शन सूची में करें। इस ग्रन्थ में ईश्वर, जीव, बन्ध, मोक्ष, सृष्टि–उत्पत्ति, प्रलय, व्यवहार सम्बन्धी विचार पाठकों को मिलेंगे। हितोपदेश पर अधिक बल दिया गया है। पृष्ठ–465 है। मूल्य 250 प्रति है। डाक व्यय फ्री होगा।

मधुर प्रकाशन, 2804, गली आर्य समाज, बाजार सीताराम, दिल्ली–6,
दूरभाष :–011–23238631
मधुर प्रकाश – मो.:–9810431857

यौन हिंसा की जड़ें

अजेय कुमार

जनसत्ता 29 जनवरी, 2013रू सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश जेएस वर्मा की अध्यक्षता में भारत सरकार द्वारा गठित समिति का उद्देश्य था आपराधिक कानूनों और अन्य प्रासंगिक कानूनों में ऐसे संभव संशोधन सुझाना ताकि 'महिलाओं पर चरम यौन हमलों के मामलों में तेजी से फैसला हो सके और मुजरिमों को कहीं ज्यादा सजा दिलाई जा सके।' अभी इस समिति को बने ज्यादा समय नहीं हुआ कि बलात्कार की अन्य हालिया घटनाओं में बहुत जल्द न्यायिक फैसले करने के उदाहरण सामने आ रहे हैं। इसका अर्थ साफ है कि न्यायिक व्यवस्था भी देखती है कि कौन–से अपराध पर सरकार गंभीर होने का संकेत दे रही है। सरकार ने लोकसभा में पिछले साल 19 अक्तूबर को एक विधेयक पेश किया था, जिसमें कहा गया था कि यौन हमला एक लिंग–निरपेक्ष अपराध है। इस विधेयक में भारतीय दंड संहिता की कई धाराओं में यौन हमले को लिंग–निरपेक्ष बनाने के लिए कई संशोधनों का प्रस्ताव किया गया है। अगर यौन हमले को लिंग–निरपेक्ष अपराध मान लिया जाए तो महिलाओं के खिलाफ यौन हमले का सवाल ही महत्त्वहीन हो जाता है। वर्मा समिति को सबसे पहले इन संशोधनों को वापस लेने की सिफारिश करनी चाहिए थी।

दूसरे, उन लोगों के प्रति कानून और भी सख्त होना चाहिए, जिनका काम कानून की रक्षा करना है। सरकारी कर्मचारियों, पुलिसकर्मियों, जेल प्रबंधकों के साथ–साथ सेना, अर्द्धसैनिक बलों आदि के लोगों से सख्ती से पेश आना होगा। मणिपुर की थांगजाम मनोरमा, कश्मीर की नीलोफर और अशिया, और हजारों आदिवासी, दलित और अल्पसंख्यक महिलाओं से, विशेषकर गुजरात दंगों में, बलात्कार करने के बाद हत्याएं करने की कई घटनाएं सामने आई हैं। इन्हें 'विरल में भी विरलतम' की श्रेणी में रख कर दोषी फौजियों, पुलिसकर्मियों और दंगाइयों को फांसी की सजा देनी चाहिए क्योंकि ये केवल बलात्कार के नहीं, हत्या के भी मामले हैं। दिल्ली बलात्कार कांड के अपराधी भी इसी श्रेणी में आते हैं।

संगीनतर यौन हमलों में सामूहिक बलात्कार, संरक्षण में बलात्कार, बच्चों से बलात्कार, सांप्रदायिक और जातिवादी हिंसा के अंतर्गत हुए बलात्कार, मानसिक या शारीरिक रूप से अपंग के साथ बलात्कार आदि शामिल होने चाहिए। ऐसे मामलों में कठोर आजीवन कारावास का प्रावधान होना चाहिए जो अपराधी की स्वाभाविक मृत्यु तक चले।

बलात्कार के सभी मामलों में समयबद्धता का ध्यान रखा जाए। अमूमन तीन महीनों में फैसला सुना देना चाहिए। यौन हिंसा के एक लाख से ज्यादा मामले अदालतों में लंबित हैं। उन्हें त्वरित अदालतों को हस्तांतरित करना चाहिए। जावेद अख्तर ने बिल्कुल सही कहा है कि जो सजा वर्तमान कानून में बलात्कार के लिए निर्धारित है, वह भी कितने अपराधियों को दी जाती है।

दिल्ली में जो प्रदर्शन हुए, उनमें अधिकतर प्रदर्शनकारियों की तख्तियों पर 'बलात्कारियों को फांसी दो' या 'बधियाकरण' की मांगें लिखी हुई थीं। यह बात किसी हद तक सही है कि आज समाज में कानून का डर नहीं रह गया है। लेकिन बलात्कार का मामला चोरी–डकैती, लूटपाट, हत्या जैसे अपराधों से भिन्न है। यह केवल कानून को कठोर बनाने से खत्म नहीं होगा। इसकी जड़ें हमारी सामाजिक–आर्थिक–राजनीतिक व्यवस्था और जनमानस के सोच में बहुत गहराई तक धंसी हैं। कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न के खिलाफ कठोर कानून बनाए जाने के बावजूद महिलाओं से छेड़छाड़ की घटनाओं में कमी नहीं आ पाई है।

यूरोप में एक जमाने में खरगोश चुराने पर फांसी दे दी जाती थी। यह दौर खत्म हुआ तो नाजियों ने अपराध को खत्म करने के लिए अपराधियों को ही खत्म करने का तर्क दिया। हिटलर के शासन में फ्रीजलर नाम के कानूनमंत्री का विश्वास था कि दंड को इतना कठोर बना दो कि लोग अपराध करने से पहले कांपने लगें। इन तमाम उपायों ने आज तक अपराध को खत्म करने में सफलता नहीं पाई है।

उन लोगों के प्रति कानून और भी सख्त होना चाहिए, जिनका काम कानून की रक्षा करना है। सरकारी कर्मचारियों, पुलिसकर्मियों, जेल प्रबंधकों के साथ–साथ सेना, अर्द्धसैनिक बलों आदि के लोगों से सख्ती से पेश आना होगा। मणिपुर की थांगजाम मनोरमा, कश्मीर की नीलोफर और अशिया, और हजारों आदिवासी, दलित और अल्पसंख्यक महिलाओं से, विशेषकर गुजरात दंगों में, बलात्कार करने के बाद हत्याएं करने की कई घटनाएं सामने आई हैं। इन्हें 'विरल में भी विरलतम' की श्रेणी में रख कर दोषी फौजियों, पुलिसकर्मियों और दंगाइयों को फांसी की सजा देनी चाहिए क्योंकि ये केवल बलात्कार के नहीं, हत्या के भी मामले हैं। दिल्ली बलात्कार कांड के अपराधी भी इसी श्रेणी में आते हैं।

समस्या यह है कि कानून बनाने वालों से लेकर उन्हें लागू करने वालों तक के सोच में ही गड़बड़ है। जरा देखें कि हमारे न्यायाधीशों की एक जमात औरत के बारे में क्या सोचती है। कल्याणी मेनन और एके शिवकुमार द्वारा लिखित पुस्तक (भारत में स्त्रियां) में 1996 में किए गए एक अध्ययन का जिक्र है, जिसमें औरतों के खिलाफ हिंसा के बारे में 109 न्यायाधीशों से लिए गए साक्षात्कारों का निचोड़ दिया गया है। इसके कुछ अंश इस प्रकार हैं।

अड़तालीस प्रतिशत न्यायाधीशों का मानना था कि कुछ मौके ऐसे होते हैं जब पति द्वारा पत्नी को थप्पड़ मारना जायज होता है। चौहत्तर प्रतिशत का मानना था कि परिवार को टूटने से बचाना ही औरत का पहला सरोकार होना चाहिए, चाहे वहां उसे हिंसा का सामना ही क्यों न करना पड़ता हो। अड़सठ प्रतिशत का मानना था कि 'उत्तेजक' कपड़े पहनना यौन हमले को बुलावा देना है। पचपन प्रतिशत का मानना था कि बलात्कार के मामले में औरत के नैतिक चरित्र की अहमियत है।

इसी प्रकार पुलिस में जो लोग काम करते हैं, उनकी क्या सोच है?एक किस्सा मैंने सोमनाथ चटर्जी के मुख से सुना है। उन्होंने बताया कि हरियाणा में एक औरत को जब उसके पति ने पीटा तो वह थाने पहुंची। थानेदार ने उसकी कहानी सुनी और पति को थाने में बुलवाया। पति से उसने एक ही सवाल पूछा कि शिकायतकर्ता क्या उसकी जोरू है?जब उसने 'हां' में जवाब दिया तो उसे बिना कुछ कहे थानेदार ने घर भेज दिया। फिर औरत से कहा, 'तेरा पति अगर अपनी लुगाई (पत्नी) को नहीं पीटेगा तो क्या पड़ोसी की लुगाई को पीटेगा?' इस तरह उसने औरत को भी डांट कर उसके घर भेज दिया।

पिछले दिनों 'तहलका' पत्रिका ने दिल्ली के विभिन्न इलाकों में तैनात पुलिसकर्मियों के साक्षात्कार प्रकाशित किए हैं जिनमें दो को छोड़ कर सभी की राय थी कि जो महिलाएं बलात्कार की शिकायत दर्ज कराने थाने में आती हैं, वे या तो अनैतिक, स्वच्छंद स्वभाव की, चरित्रहीन होती हैं, या वेश्याएं होती हैं और वे पुरुषों को ब्लैकमेल करना चाहती हैं। जिनके कंधों पर महिलाओं की सुरक्षा की जिम्मेदारी है, उन्हें अगर अपनी सोच बदलने के लिए प्रशिक्षण नहीं दिया जाएगा तो परिवर्तन कैसे होगा?

यह बात भी समझने की है कि बलात्कार केवल यौन–लिप्सा मिटाने का मामला नहीं है, यह एक महिला पर अपना प्रभुत्व जमाने का भी मामला है। सोलह दिसंबर के सामूहिक बलात्कार के मुख्य आरोपी ड्राइवर रामसिंह ने कहा है कि उसे सबसे अधिक गुस्सा तब आया जब पीड़िता ने उसका खुला विरोध किया। जब आसाराम बापू यह कहते हैं कि लड़की को बलात्कारियों के पैरों में पड़ जाना चाहिए था, तो वे एक तरह से ड्राइवर रामसिंह के सोच का ही समर्थन कर रहे होते हैं। यह सोच, केवल आसाराम बापू का नहीं है, हमारे अधिकतर राजनीतिकों का भी है, वे मर्द हों या औरत, मोहन भागवत हों या ममता बनर्जी।

जिन लोगों ने दिल्ली में छात्रा के साथ सामूहिक बलात्कार किया, वे इसी समाज के बाशिंदे हैं। यह वह समाज है जहां विज्ञापनों और फिल्मों में औरत को लगभग नंगा दिखा दिया जाता है। यहां 'मुन्नी बदनाम हुई', 'शीला की जवानी' के बाद ऐसे गानों के बोलों पर कोई रोक नहीं कि 'मैं तंदूरी मुर्गी हूं यार, घटका ले मुझे एल्कोहोल से' (दंबग–2 का फेवीकोल वाला गीत)। सामूहिक बलात्कार करने वाले ड्राइवरों और रिक्शाचालकों के शैक्षिक स्तर को देखें। उन्हें एक सभ्य मनुष्य बनाने के लिए इस व्यवस्था ने कितना खर्च किया है, इस पर भी सोचना होगा। क्या वे समझ सकते हैं कि एक पारा–मेडिकल छात्रा इस समाज को कितना कुछ दे सकती है और उसकी हत्या नहीं करनी चाहिए। इन लोगों ने औरतों को केवल अपने घरों में खटते देखा है। उन्होंने शराबी पिता और घर में चाचा–ताऊ की जबर्दस्त हिंसा झेलती हुई अपनी बहनों और मांओं को देखा है। उन्होंने युवा होते–होते देखा है कि घर के परेशानहाल पुरुष उनके साथ समाज में हो रहे अत्याचारों का बदला घर की औरत की देह से लेते हैं। और घर अगर गांव में हो, तो शहर में चलती–फिरती कोई भी औरत उनका शिकार हो सकती है।

उड़नशील विदेशी और देसी पूंजी महिलाओं को घर से बाहर आने के लिए आमंत्रित कर रही है, पर समाज अब भी पुरुषवादी वर्चस्व को बनाए रखना चाहता है। उद्योगीकरण के लिए, औरत–मर्द की समानता का प्रश्न इसलिए केंद्रीय महत्त्व का है।

नेहरू ने कहा था कि भारत में प्रगति का यह आलम है कि एक तरफ नाभिकीय संयंत्र हैं तो दूसरी तरफ गोबर का चूल्हा। आज भी हम देखते हैं कि बड़े–बड़े शहरों में सड़कों पर भैंसा–बुग्गी के साथ–साथ मर्सिडीज बैंज दौड़ती हुई दिखाई देती है। लालबत्ती पर गौर से देखने पर इन लंबी–लंबी कारों में अनपढ़ गंवार युवा भी दिखाई दे जाते हैं।

यह नवधनाढ्य वर्ग है जिसके पास पिछले कुछ वर्षों में नवउदारवादी नीतियों के कारण बहुत पैसा आ गया है। प्रायः इनके पास पुश्तैनी जमीन है, जो शहरों में बड़े–बड़े मॉल बनाने की जरूरत के चलते बहुत महंगी हो गई है। युवाओं के पास पचास–पचास हजार के मोबाइल और घड़ियाँ, लेकिन शिक्षा के नाम पर सिफर। ऐसे लड़के जब शहरों और कस्बों में अपनी गाड़ियों में निकलते हैं तो महिलाएं इनका पहला शिकार बनती हैं।

संपन्नता और ऊंचे रसूख के कारण इस वर्ग के बलात्कारी एक ही रात में जमानत लेकर छूट जाते हैं। पकड़ में आते हैं तो रिक्शाचालक, ट्रक ड्राइवर आदि। इसका अर्थ यह नहीं कि दरिद्र वर्ग के लोगों को बलात्कार करने का अधिकार है। पर हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए, जैसा कि डायसन कार्टर ने अपनी मशहूर पुस्तक 'पाप और विज्ञान' में लिखा है कि ''प्रत्येक अपराध का बीज समाज में मौजूद होता है। समाज ही उन परिस्थितियों को जन्म देता है जिनसे अपराध के लिए इंसान को बढ़ावा मिलता है।''

एक और बात! बलात्कार का अर्थ इज्जत का चले जाना नहीं होना चाहिए। दरअसल, इज्जत तो बलात्कारी की जानी चाहिए जैसे किसी लुटेरे या जेबकतरे की जाती है, पर हमारे यहां इसे औरत की इज्जत से जोड़ दिया गया है। भारतीय दंड संहिता की धारा 354 और 509 में भी 'महिला के मान भंग करने' का जिक्र है।

सुषमा स्वराज ने बलात्कार की शिकार महिलाओं को जिंदा लाश ही कह डाला। क्या कौमार्य खो जाने से एक स्त्री के जीवन का मूल्य खत्म हो जाता है?इस धारणा को खारिज करने की जरूरत है कि औरत की इज्जत उसकी योनि में है। यह उतनी ही बेहूदा बात है कि कोई यह कहे कि एक पुरुष की बुद्धिमता उसके जननांग में होती है। बलात्कार जघन्य अपराध है, इसमें दो राय नहीं, पर एक औरत की जिंदगी में बहुत–सी परेशानियां, पेचीदगियां हैं जैसे किसी पुरुष की जिंदगी में। बहुत–सी नारीवादी स्त्रियां पितृसत्ता से नफरत करते–करते पुरुषों से ही नफरत करने लगती हैं। सवाल पितृसत्तात्मक व्यवस्था को खत्म करने का है, पुरुषों को नहीं। मुक्तिकामी जनता– जिसमें पुरुष और स्त्रियां दोनों शामिल हैं– के संघर्षों का हिस्सा बन कर ही स्त्रियों समेत शोषित–पीड़ित वर्गों की आजादी और इज्जत की रक्षा की जा सकती है।

– जनसत्ता से साभार

"मजदूर दिवस पर मुक्त छत्तीसगढ़ीयां बंधुआ मजदूरों का सम्मेलन सम्पन्न"

जांजगीर चांपा, छत्तीसगढ़ के बाराद्वार बस्ती गांव में बंधुआ मुक्ति मोर्चा, छत्तीसगढ़ एवं आर्य समाज न्याय मंच, छत्तीसगढ़ के संयुक्त तत्वावधान में मजदूर दिवस के अवसर पर मुक्त छत्तीसगढ़ीयां बंधुआ मजदूरों का सम्मेलन आयोजित किया गया। आयोजित समारोह के मुख्य अतिथि बंधुआ मुक्ति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी रहे जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती भूरी दिवाकर ने की।

स्वागत समारोह के पश्चात समारोह के संचालक श्री प्यारेलाल दिवाकर ने बंधुआ मुक्ति मोर्चा, छत्तीसगढ़ द्वारा पिछले वर्ष के दौरान आयोजित की गई समस्त गतिविधियों का ब्यौरा प्रस्तुत करते हुए बंधुआ एवं बाल मजदूरों के मुक्ति एवं पुनर्वास पर प्रकाश डाला। इसी क्रम में श्रीमती भूरी दिवाकर के निर्देशन पर अनेकों मुक्त छत्तीसगढ़ीयां बंधुआ मजदूरों ने अपने गुलामी एवं बेगारी के दौर का वृतान्त प्रस्तुत करते हुए पुनर्वास की गुहार लगाई और बंधुआ एवं बाल मजदूरों के प्रति प्रशासन की असंवेदनशलीता को उजागर किया।

सर्वधर्म संसद के ट्रस्टी श्री मनू सिंह ने मुक्त बंधुआ एवं बाल मजदूरों को संगठित होने की प्रेरणा प्रदान की साथ ही समारोह के प्रतिभागियों को समाज में व्याप्त शोषण और अत्याचार के खिलाफ हर क्षण पुरजोर विरोध करने हेतु प्रेरित किया।

आयोजित समारोह के मुख्य अतिथि स्वामी अग्निवेश जी ने बंधुआ एवं बाल मजदूरों को सम्बोधित करते हुए कहा कि बंधुआ मुक्ति मोर्चा की पहल पर पूरे देशभर से छत्तीसगढ़ियां बंधुआ एवं बाल मजदूरों को मुक्त कर पुनर्वास हेतु पुनः छत्तीसगढ़ भेजा गया किन्तु छत्तीसगढ़ सरकार और संबंधित प्रशासन बंधुआ एवं बाल मजदूरों के प्रति ऐसी बेरूखी रखेगा तो मुक्त बंधुआ मजदूर पुनः देश के किसी न किसी कोने में बंधुआ मजदूरी करते अवश्य पाये जायेंगे। इसमें कोई दोराय नही है और इसकी सम्पूर्ण जिम्मेदार छत्तीसगढ़ सरकार होगी जिसने समय पर बेसहारा, दलित, आदिवासी बंधुआ मजदूरों को पुनर्वास नही दिया, साथ ही साथ सरकार से मांग की गई कि बंधुआ मजदूरों को प्रदान की जाने वाली पुनर्वास सहायता राशि 20,000 से बढ़ाकर 50,000/–रू0 हो ताकि वास्तव में बंधुआ मजदूर का पुनर्वास हो और वो समाज की मुख्यधारा से जुड़ सके।

जनता मालिक और सरकार सेवक तथा कमाने वाला खायेगा–लूटने वाला जायेगा–नया जमाना आयेगा के नारे को दोहराते हुए स्वामी जी ने बंधुआ मजदूरों को संघर्ष कर अपना अधिकार प्रशासन और सरकार से लेने की प्रेरणा प्रदान की। इसी क्रम में न्यूनतम मजदूरी पर प्रकाश डालते हुए नशा मुक्त समाज निर्माण विषय पर अपने विचार व्यक्त किये। जिसमें स्वामी जी ने कहा कि शराब मजदूर वर्ग की सबसे बड़ी दुश्मन है। क्योंकि मजदूर अपनी खून–पसीने से कमाई गई मजदूरी का सारा रूपया–पैसा शाम से रात्रि के अंधेरे में उड़ा कर कंगाल होता जाता है इसलिए स्वामी जी ने समारोह में उपस्थित लोगों को नशा मुक्त जीवन जीने एवं नशा मुक्त समाज बनाने का संकल्प दिलवाया। समारोह में ही कई लोगों ने खड़े होकर नशा छोड़ने की कड़ी प्रतिज्ञा की।

स्वामी जी ने झारखण्ड और छत्तीसगढ़ सहित कई राज्यों में झूठे ही नक्सली के आरोप में हजारों आदिवासियों को जेल में डाल देने पर चिंता व्यक्त की और छत्तीसगढ़ सरकार से अपील करते हुए कहा कि छत्तीसगढ़ के जेलों में कैद निर्दोष आदिवासियों को प्रतिदिन के हिसाब से 1000/–रू0 हर्जाना देते हुए शीघ्र रिहा करे।

उन्होंने बताया कि पिछले लगभग तीन वर्ष के दौरान बंधुआ मुक्ति मोर्चा की पहल पर पूरे देशभर से लगभग 900 से भी अधिक छत्तीसगढ़िया बंधुआ एवं बाल मजदूरों को मुक्त करवाया गया और समस्त बंधुआ मजदूरों के पुनर्वास के लिए मुख्यमंत्री श्री रमण सिंह के साथ मीटिंग की जिसमें मुख्यमंत्री ने स्वयं पुनर्वास के आदेश जारी किये किन्तु आज भी अनेकों बंधुआ मजदूर सरकार और प्रशासन से पुनर्वास की गुहार लगा रहे है और खुले आसमान के नीचे पशु तुल्य जीवन काट रहे है। बंधुआ मजदूरों को सम्बोधित करते उन्होंने कहा कि सारे मजदूरों को प्रशासन के द्वार पर धरना देना चाहिए ताकि गहरी नींद में सोया प्रशासन अपनी आंखे खोल ले।

आयोजित समारोह में सामाजिक कार्यकर्ता श्री मुरली चन्द, श्री जे0पी कुर्रे, श्रीमती तरूणा सतनामी, डॉ0 रोहन दास भारद्वाज, संत खड़क दास थे तथा जांजगीर–चांपा प्रशासन की ओर से लेबर इन्स्पेक्टर उपस्थित थे।

कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद की रस्म मुक्त बंधुआ मजदूर श्री नवीन कुमार ने अदा की।

कार्यवाहक निदेशक, बंधुआ मुक्ति मोर्चा, नई दिल्ली

इस्लामिक विद्वान डॉ. असगर अली इंजीनियर का इंतकाल

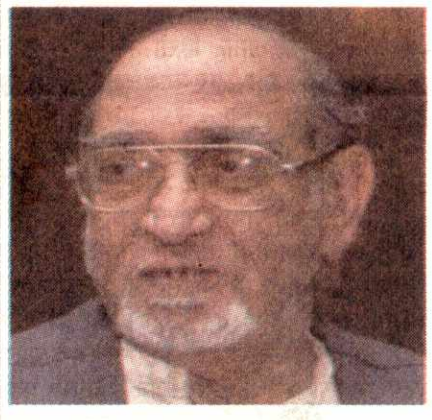

उदयपुर। इस्लामिक विद्वान और प्रख्यात चिंतक, सेंट्रल बोर्ड ऑफ दाऊदी बोहरा कम्यूनिटी के चेयरमेन डॉ. असगर अली इंजीनियर का मंगलवार सुबह 9.30 बजे मुंबई में उनके निवास पर इंतकाल हो गया। वे 74 वर्ष के थे। पिछले एक माह से बीमार थे। मुंबई के ही एक अस्पताल में उनका इलाज चल रहा था।

डॉ. असगर अली इंजीनियर के निधन का समाचार सुन दाऊदी बोहरा जमात (यूथ) में शोक की लहर दौड़ गई है। इसके बाद बड़ी संख्या में समाज के लोग मुंबई के लिए रवाना हुए।

स्वामी अग्निवेश जी तथा डॉ. असगर अली इंजीनियर जी को वैकल्पिक नोबेल पुरस्कार 2004 में वितरित किया गया।

मरहूम असगर अली को बुधवार सुबह 10 बजे मुंबई में ही दफनाया जाएगा। उनकी मय्यत में उदयपुर सहित देश भर से कई समाज जन मौजूद रहेंगे।

दाऊदी बोहरा जमात के प्रवक्ता अनीस मियांजी ने बताया कि असगर अली इंजीनियर के इंतकाल के शोक में उदयपुर में दाऊदी बोहरा जमात के लोग बुधवार को दुकानें बंद रखेंगे।

वजीहपुरा मस्जिद में होगी शोक सभा : उदयपुर में दाऊदी बोहरा समुदाय की ओर से बुधवार सुबह 11.30 बजे बोहरवाड़ी स्थित वजीहपुरा मस्जिद में शोक सभा की जाएगी। सामूहिक नियाज में दुआएं, मगफिरत होगी। गुरुवार को फातेहा की नियाज होगी।

मुद्दा है बलात्कार की मानसिकता

मनुष्य में गुण और दुर्गुण दोनों होते हैं, मनुष्य को दुर्गुणों का बोध प्रायः मित्रों के निर्देश और शत्रुओं की निन्दा से होता है। मनुष्य अपनी त्रुटियों, कमजोरियों और पापों को जितना स्वयं जान सकता है, उतना अन्य कोई प्राणी नहीं जान सकता। अपने हृदय को टटोलने से ही मनुष्य यह जान पाता है कि मैं क्या हूँ, मुझे क्या बनना चाहिए, जिससे इस जगत् में मैं सुख और आनन्द से रह सकूँ और परलोक का सुधार कर सकूँ।

अपने हृदय को टटोलते हुए हमें यह देखना चाहिए कि हम परमात्मा और जगत् के सामने अपना सिर ऊँचा करके चल सकते हैं या नहीं?हम बुद्धिमान और भले हैं या नहीं?हमें परमात्मा और अन्तरात्मा का आशीर्वाद एवं संसार के मनुष्यों का आदर और विश्वास प्राप्त है या नहीं?

रात को सोते समय अपने दिनभर के कार्यों पर हमें दृष्टि डालनी चाहिए और यदि दिन में हमसे कोई बुरा काम हो गया हो तो उस पर पश्चाताप करके आगे उस काम को न करने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। जीवन सुधार का यह सुपरीक्षित उत्तम साधन है, इसे आत्मनिरीक्षण कहते हैं। जब हम प्रातःकाल उठकर जीवन के कामों में लगें तो यह ध्यान रखें कि रात्रि को आत्मनिरीक्षण करते समय हमें अपने दिनभर के किसी कार्य या व्यवहार पर दुःखी होने का अवसर उपस्थित न हो।

अपना सुधार करने की इच्छा रखने वाले मनुष्य को अपने पर अत्यधिक विश्वास न करना चाहिए। जीवन में गुणों को धारण करना तो अच्छा है, परन्तु उन पर अभिमान करना अच्छा नहीं है। अपने गुणों से परिचित रहने से मनुष्य में आत्मविश्वास उत्पन्न होता है, जो जीने की सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण तत्व होता है। गुणों पर अभिमान करने से मनुष्य के अपेक्षित सुधार में बाधा उपस्थित होती है। दूसरों की विशेषताओं के प्रति उदार और अपनी विशेषताओं के प्रति अनुदार रहने से मनुष्य अपना बहुत कुछ सुधार करने में समर्थ हो जाता है।

मनुष्य को अपने वास्तविक स्वरूप का बोध कर्तव्य पालन से होता है, केवल मनन और विचार करने से नहीं। कर्तव्यपालन में निरत व्यक्ति की उपयोगिता और विशेषताएँ दूसरे व्यक्ति ही ठीक–ठीक जान पाते हैं, दूसरों की दृष्टि में उसका जितना मूल्य होता है, उसे वह व्यक्ति स्वयं नहीं जान पाता, अपनी उपयोगिता का यह अज्ञान मनुष्य को अधिकाधिक विनम्र और योग्य बना देता है।

– सत्येन्द्र रंजन

अपनी त्रुटियों को जानने वाले कर्तव्यपरायण बुद्धिमान व्यक्ति किसी उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य को सहसा ही हाथ में लेते हुए डरते हैं। जब सुलेमान को न्यायाधीश का पद अर्पण किया गया तो उन्होंने डरते–डरते उस पद को ग्रहण किया। न्यूटन जैसे महान् विज्ञानवेत्ता और गणितज्ञ कहा करते थे कि मैं 'ज्ञान के असीम समुद्र में मोतियों की खोज के लिए गोते लगाता हूँ; परन्तु मुझे कतिपय कंकड़ ही हाथ लग पाते हैं।' न्यूटन की यह विनम्रता और अपनी उपयोगिता के प्रति यह उपरामता ही थी, जिसने न्यूटन को अपने जीवन ध्येय में निरत रखकर चमका दिया था।

मनुष्य के गुणों और बुद्धि की पहुँच की सीमा होती है। वह न तो निर्भ्रान्त होता है और न सर्वज्ञ। बुद्धिमान् व्यक्ति अपने विकास के लिए दूसरों की विशेषताओं को सामने रखते और धीरे–धीरे परमात्मा को, जो परमादर्श होता है, अपना आदर्श बनाकर उस तक पहुँचने का प्रयास करते हैं। परमात्मा तक पहुँचने में समर्थ होने के लिए मनुष्य को अपना और परमात्मा का ज्ञान उपलब्ध करना होता है। जिसने अपने को जान लिया, उसने सब कुछ जान लिया। आत्मज्ञान की प्राप्ति मनुष्य को जान में या अनजान में परमात्मा की ओर प्रेरित करती है और परमात्मा के ज्ञान से आत्मज्ञान में परिपक्वता आकर मनुष्य दिव्यालोक से प्रकाशित हो उठता है। इस आत्मज्ञान का अर्थ है – अपने प्रति सच्चा बनना। जो व्यक्ति अपने प्रति सच्चा नहीं होता, वह दूसरों के प्रति क्यों कर सच्चा बन सकता है?अपने ज्ञान से जहाँ मनुष्य का अपना लाभ होता है और उसे अपने गुणों का ज्ञान होता है, वहाँ मनुष्य अपने और दूसरों के प्रति न्याय करने में समर्थ हो जाता है। वस्तुतः मनुष्य में दूसरों के भावों को समझने और उनका आदर करने की वास्तविक योग्यता भी इस आत्मज्ञान से आती है। जब हम दूसरों की त्रुटियों की चर्चा करने लगें तो हमें यह सोचना चाहिए कि वे त्रुटियाँ हममें हैं या नहीं?अपने दोषों को और त्रुटियों को आइना बनाना चाहिए।

खाने–पीने और मौज उड़ाने में रत रहने वाले व्यक्तियों को अपना ज्ञान प्राप्त करना अत्यन्त कठिन होता है। उनका ध्यान और उनकी समस्त प्रक्रिया स्वार्थसिद्धि, भोगविलास और सांसारिकता पर केन्द्रित होकर उनकी आत्मा में खो जाती है।

अब से हजारों वर्ष पूर्व यूनानियों की घोर विलासिता में यूनान के सांस्कृतिक ह्रास के बीज का वपन हुआ था। यूनान के निवासीजन भौतिक सुख और भौतिक चमक से प्रभावित होकर शरीर के उपासक और इन्द्रियों के दास बनकर चारित्रिक पतन की ओर अग्रसर हो रहे थे। तब एक दिव्यात्मा महात्मा सुकरात के रूप में अवतरित हुई। महात्मा सुकरात दिन में चिराग लेकर एथेन्स (यूनान की राजधानी) की सड़कों पर घूमने लगे। लोगों ने उन्हें पागल कहा, उनकी हंसी उड़ाई। जब एक व्यक्ति ने इसका कारण पूछा तो उन्होंने कहा 'एथेन्स के निवासी अपने को भूल गये हैं। आँखें होते हुए भी वे अन्धे हो गये हैं। उनके हृदय की आँखें ज्योतिहीन हो गई है। वे दिन में भी अन्धकार में टटोल रहे हैं। इसीलिए उन्हें प्रकाश की आवश्यकता है।'

'तू अपने आपको जान' सुकरात का यह महान् सन्देश था। इस सन्देश का प्रसार और प्रचार करने का मूल्य उन्हें अपने प्राणों के द्वारा चुकाना पड़ा। स्वार्थ और भोग–अज्ञान और अन्धकार में विलीन प्रजा उनके इस सन्देश का मूल्य उनके जीवन काल में न समझ सकी। समय आया, जब उनका यह सन्देश यूनान की तीन देववाणियों में प्रतिष्ठित होकर डेलफी के मन्दिर द्वार पर स्वर्णाक्षरों में अंकित हुआ।

आज की भोग प्रधान संस्कृति में जीवन संघर्ष और शक्ति संचय के काारण मानव का जीवन ध्येय पेट और पैसा बना हुआ है। मनुष्य का आत्मविषयक अज्ञान बड़ा दुःखद और शोकपूर्ण बन गया है, जिसके कारण जीवन में और जगत् में अशान्ति व्याप्त हो रही है।

बेटी–बहू हों एक समान

आज ज्यादातर घरों में लड़कियों और लड़कों को बराबर शिक्षा दी जाती है। मां–बाप हर कोशिश करते हैं कि उनकी बेटी अपने पैरों पर खड़ी हो और वह हो भी रही है परन्तु विवाह, ससुराल, पति आदि एक ऐसा सच है जिसमें ज्यादा फर्क नहीं पड़ा। अगर आपकी बेटी डाक्टर है तो आपका दामाद भी कोई डाक्टर, इंजीनियर या कोई अच्छा बिजनैसमैन होगा।

उनके घर में आपकी बेटी को कुछ न कुछ तो जरूर सहना ही पड़ेगा। पढ़े–लिखे बच्चे ज्यादा संवेदनशील होते हैं। सास या ननद की छोटी–सी बात को भी गहराई तक ले जाते हैं और महसूस करते हैं। जब बार–बार ऐसा होता है तो बहू के मन में नकारात्मक सोच उत्पन्न हो जाती है।

ऐसी स्थिति में अक्सर देखा गया है कि ससुराल का कोई भी सदस्य उसका साथ नहीं देता। सभी चुप्पी साध लेते हैं। पति

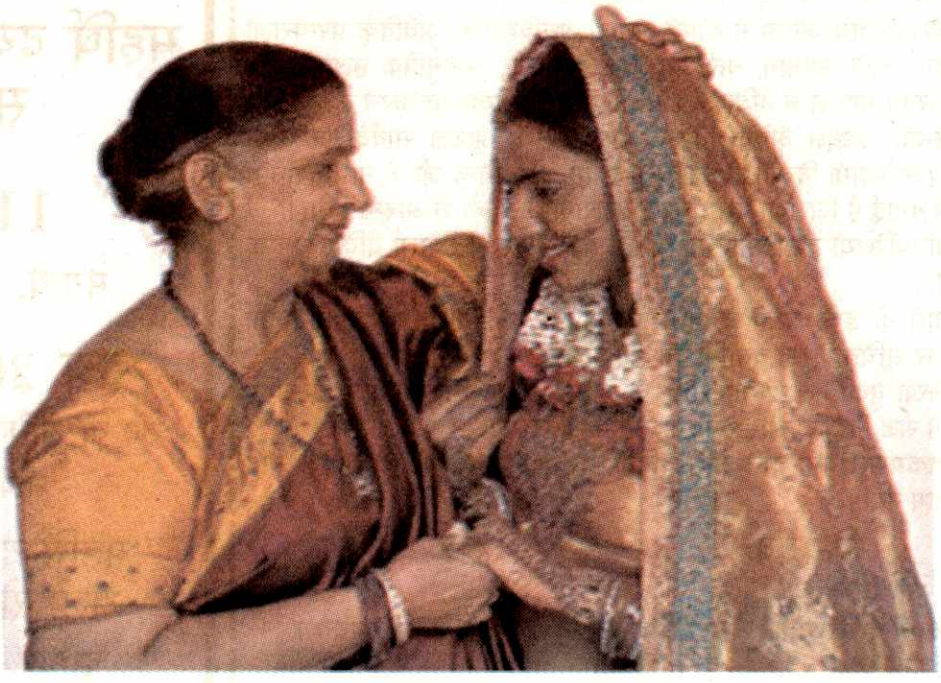

खासकर कन्नी कतरा जाता है। वह सोचता है कि मैं अगर कुछ बोला तो सब मुझे जोरू का गुलाम कहेंगे। हर रोज गाली–गलौच, बेइज्जती, मारपीट बहुत से परिवारों में आम बात है।

नारी चुपचाप सारी जिंदगी घुट–घुट कर जीती रहती है क्योंकि सात फेरे लिए हैं। आंसुओं को पीती रहती है क्योंकि माता–पिता ने बड़े अरमानों के साथ विदा किया था। नारी अपने जख्मों को छुपा कर मुस्कुराती रहती है क्योंकि परिवार की इज्जत का सवाल है। अगर जुबान खोलेगी तो जिन्दगी बिखर जाएगी। फिर शायद वह यह जिन्दगी दोबारा न तो समेट पाएगी और न ही संवार पाएगी।

आजकल मां–बाप अपनी बेटियों को आत्मनिर्भर और आत्मविश्वासी बनाने के बावजूद अक्सर एक शिक्षा देते हैं या फिर यूं कह लें कि लड़की भी

शेष पृष्ठ 6 पर

बाजार की खिचड़ी

मेरे दोस्त के बेटे का जन्म दिन था। रविवार का दिन था तो उसने मुझे सुबह ही बुला लिया। पंडित जी आए, पूजा हुई, फिर शाम को केक काटा गया। जब बच्चे और घर की महिलाएँ रात में खाना खा रही थीं तो हम सारे दोस्त छत पर गए और शराब का दौर शुरू हुआ। संस्कृति का यह घालमेल सीधे–सीधे बाजारवाद और उपभोक्तावाद से जन्मा है, जहाँ लोग खुद को आगे दिखाने की होड़ में लगभग हर गैरजरूरी उत्पाद खरीद कर अपने आपको छद्म सुख देते हैं। दूसरी ओर, भगवान की पूजा और सारे कर्मकांड करके अपने 'पापों का निवारण' करके संतुलन भी बनाए रखते हैं। आज जितनी भीड़ बाबाओं के समागमों में देखने को मिलती है, कुल मिलाकर लगभग उतनी ही 'केएफसी', 'मैक्डोनाल्ड; या 'पित्जा हट' जैसी जगहों में भी मिल जायेगी। उपभोक्तावादी संस्कृति के चलते आज हर आयोजन पर दिखावा हावी हो चुका है। खाने की लंबी सूची, हर शादी में चार–पांच आयोजन और सभी के लिए अलग–अलग कपड़ों की तैयारियाँ। बेटी या बेटे के घर वाले अपनी मेहनत की कमाई लगा कर या उधार लेकर सब गैरजरूरी इंतजाम करके समाज में अपने दंभ को दर्शाते हैं।

अब इस संस्कृति को क्या कहा जाए जो सिर्फ माल बेचने के लिए कृत्रिम रूप से बनाई गई है। यह 'क्रिकेट के भगवान' या 'सिनेमा के भगवान' आदि के रूप में अक्सर नए–नए 'भगवान' भी सामने रखती रहती है, ताकि आप उनके द्वारा विज्ञापित सामान खरीदें। इसी संस्कृति का वीभत्स रूप पश्चिमी दुनिया के कई देशों में देखने को मिलता है जहाँ युद्ध सामग्री और हथियार बेचने के लिए अंध राष्ट्रभक्ति तक को विज्ञापनों के रूप में दिखाया जाता है। फिलहाल हमारे त्रिशंकु समाज के खिचड़ी संस्कार तब तक ऐसे ही चलते रहेंगे, जब तक इन्हें रचने वालों का समूल नाश नहीं होगा या किया जायेगा।

असल में हमारा भारतीय समाज त्रिशंकु अवस्था में झूल रहा है। इसकी हालत एक बच्चे जैसी है, जिसे कोई एक झुनझुना लाकर दे दें तो वह उसे बजाने लगता है। जब बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को अपना धंधा संभालने के लिए सस्ते कामगारों की जरूरत पड़ी तो यहाँ एम बीए और बिजनेस स्कूल खुलवा कर एक झुनझुना पकड़ा दिया। बाकी सब उसी का विस्तार है।

इस धरती पर मानव समाज का हर जगह अलग–अलग अवस्थाओं मे विकास हुआ है। दुनिया में जब मशीन आई तो मालिकों के दिमाग इससे ज्यादा से ज्यादा मुनाफा कमाने की जुगत में लग गए। आज माहौल कुछ ऐसा बना दिया गया है कि लोग मोबाइल, मॉल संस्कृति इंटरनेट और कप्यूटर को ही प्रगति का पैमाना मानने लगे हैं। अगर आप गेहूँ, चावल और दाल उगाने वाले किसानों की बात करें तो वे इसे कोई तवज्जो नहीं देते। लेकिन यह सोचने की जरूरत है कि इन सब चीजों का इस्तेमाल करते हुए भी जब हर दो–तीन घंटे में आपको भूख लगती है तो खाने की कोई भी चीज, गेहूँ, चावल या किसी अन्न से ही बनी होती है, जिसे हमारे किसान पैदा करते हैं। आप भले ही 'केएफसी' या हल्दीराम की दुकानों में खाएं, लेकिन किसान की मेहनत का ही फल खाते हैं। इण्टरनेट आपकी भूख नहीं मिटा सकता। आज भी माल बेचने के लिए पूंजीवाद एक या दो नहीं, बल्कि हर दिशा से हमला करके आपको माल खरीदने के लिए मजबूर करता है। ये कड़ियाँ आपस में जुड़ी हुई हैं। मसलन, टीवी और सिनेमा में फैलाई जा रही अश्लीलता और धारावाहिकों से नौजवानों में यह भाव पनपा है कि आज के युग में महिला या पुरुष दोस्त या प्रेमिका का होना जरूरी है। इसके बाद साथ घूमने–फिरने की जगहों के रूप में मॉल और दूसरे तमाम बाजार खुले पड़े हैं। फिर 'लवर्स डे', 'किस. डे', 'चाकलेट डे' और न जाने किस–किस तरह के डे और उनके मुताबिक अलग–अलग तोहफे।

अब इस संस्कृति को क्या कहा जाए जो सिर्फ माल बेचने के लिए कृत्रिम रूप से बनाई गई है। यह 'क्रिकेट के भगवान' या 'सिनेमा के भगवान' आदि के रूप में अक्सर नए–नए 'भगवान' भी सामने रखती रहती है, ताकि आप उनके द्वारा विज्ञापित सामान खरीदें। इसी संस्कृति का वीभत्स रूप पश्चिमी दुनिया के कई देशों में देखने को मिलता है जहाँ युद्ध सामग्री और हथियार बेचने के लिए अंध राष्ट्रभक्ति तक को विज्ञापनों के रूप में दिखाया जाता है। फिलहाल हमारे त्रिशंकु समाज के खिचड़ी संस्कार तब तक ऐसे ही चलते रहेंगे, जब तक इन्हें रचने वालों का समूल नाश नहीं होगा या किया जायेगा।

खैर, मेरा जिगरी दोस्त अश्मित उस दिन सुबह–सुबह मंदिर गया था पूजा करने। दरअसल, उसे एक बड़ी सॉफ्टवेयर कम्पनी में इण्टरव्यू देने जाना था। दोपहर बाद उसका फोन आया कि इंटरव्यू अच्छा रहा और अगले महीने नौकरी शुरू करनी है। उसने शाम को अपने घर 'बियर पार्टी' के लिए बुलाया था। पूंजीवाद ऐसे ही तंत्र बुनता है।

– जनसत्ता से साभार

पृष्ठ–5 का शेष

बेटी–बहू हों एक समान

यही सोचती है कि झगड़ा करके मायके जाऊंगी तो लोग या रिश्तेदार क्या कहेंगे?हर किसी को बेटी से ज्यादा समाज की चिन्ता रहती है।

फिर वह अकेली कहां जाएगी?क्या उसे अपने परिवार में, जिसमें उसकी भाभियां आ चुकी हैं, जगह मिल पाएगी?बिल्कुल नहीं या फिर मिलेगी तो बहुत कुछ सहने के पश्चात् ऐसे में वह सोचने लगती है कि ससुराल में सह लेती तो अच्छा था। यहां तो ससुराल से भी ज्यादा अपमानित होना पड़ता है और बुजुर्ग मां–बाप को कुछ दे तो पाई नहीं, उल्टा और दुःखी कर दिया।

नारी अकेले रहने की सोच कर ही कांप उठती है क्योंकि अकेली लड़की को समाज नोच लेगा। हर हाल में एक ही हल सोचती है जहां हो वहीं रहो, उसी में जीना सीखो। ऐसे में अक्सर महिलाएं तनावग्रस्त हो जाती हैं और यह तनाव महिलाओं को अजगर की तरह निगलना शुरू कर देता है। कई स्त्रियां मानसिक रोगों से ग्रस्त हो जाती हैं और क्रोधी, चिड़चिड़ी तथा झगड़ालू बन जाती हैं। संयुक्त परिवारों में महिलाएं अक्सर अपने जीवन का बड़ा हिस्सा सहते–सहते बिता देती हैं और बहुत सी बीमारियों का शिकार भी हो जाती हैं।

ऐसे में कई स्त्रियां पति और ससुराल पक्ष के अन्य रिश्तेदारों की अनुपस्थिति में अपनी दबी भावनाओं को तृप्त करने की कोशिश करती हैं। सहेलियों से ससुराल वालों की बुराई करना, शृंगार करके दूसरे पुरुषों के सामने जाना, उनसे अपनी प्रशंसा सुनकर खुद को शांत करना उनको अच्छा लगने लगता है।

आज भी बहुत कम सास–ससुर हैं जो बहू को उसका बनता दर्जा देते हैं। लड़की को अच्छी पढ़ाई, अच्छी शिक्षा और जो सुख मां–बाप से मिलता है वो ससुराल में जाते ही खत्म होने लगता है। एक लड़की बड़े अरमानों से शादी करवाती है, सपने सजाती है।

अगले परिवार से मिलने वाले अथाह प्रेम की मृगतृष्णा में वह खुशी–खुशी अपना परिवार छोड़ देती है। वहां उसे सबसे ज्यादा भरोसा अपने पति पर होता है जो खुद एक बच्चे के समान अपने मां–बाप पर मानसिक तौर पर निर्भर होता है। जब भी सास–बहू के किसी झगड़े की सुलह करने कुछ लोग बीच में पड़ते हैं तो हमेशा कहते हैं, 'बेटा वह तो बड़ी है, तुम्हें ही समझ कर बोलना चाहिए।' जब सास को गुस्सा आए तब उसे गुस्सा न आए। ऐसा क्यों?

बहू को सम्मान दो। उसे इतना प्यार दो कि वह आपके बेटे की कमजोरियों को भी नजरअंदाज करते हुए उससे प्रेम करे। बेटे की शादी करते ही जहां मां–बाप का कर्त्तव्य दोनों के प्रति होना चाहिए, वहां मां–बाप, सास–ससुर बन कर हकों की बात करनी शुरू कर देते हैं।

आप अपने बेटे को अपने वश में नहीं कर रहे बल्कि आप अपने बेटे का जीना हराम कर रहे हैं। सास–ससुर यह क्यों सोचते हैं कि उनका बेटा अब उनका नहीं रहा। आप अपनी बहू का दिल जीत लें। बेटा, आपका साथ कभी नहीं छोड़ेगा। अब समय आ गया है कुछ करने का। नारी को खुद से प्रेम करना सीखना चाहिए। अपमान नहीं सहना चाहिए।

घरेलू हिंसा की शिकार महिलाओं को सहारे की जरूरत होती है। सब कुछ ठीक हो सकता है अगर वह चाहे तो। किसी ऐसी महिला की पुकार को उसका निजी मामला कह कर मुंह न फेरें, कोशिश करें, मदद करें शायद आप एक नारी का जीवन सुधार सकें।

पंजाब केसरी से साभार

वैदिक विरक्त मण्डल, नई दिल्ली की

वैदिक धर्म प्रचार यात्रा 23 मई से 31 मई, 2013 तक उत्तराखण्ड में भ्रमण करेगी

पाठकों को यह जानकर हर्ष होगा कि भारतीय जनता में व्याप्त अनेकों अंधविश्वासों, अवैदिक परम्पराओं जैसे मूर्ति पूजा, मद्यपान, धूम्रपान, माँसाहार, नारी अपमान, नारी असुरक्षा, अपहरण, अमानुषिक हत्यायें, भ्रूण हत्या आदि को समाप्त करने हेतु वैदिक विरक्त मण्डल ने वैदिक धर्म प्रचार यात्रायें आयोजित करने की योजना पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती (चम्बा), अध्यक्ष वैदिक विरक्त मण्डल तथा अध्यक्ष सार्वदेशिक सभा संचालन समिति, दिल्ली के निर्देशन और पूज्य स्वामी दिव्यानन्द जी तथा स्वामी प्रणवानन्द जी के मार्ग दर्शन में और स्वामी आर्यवेश जी के कुशल नेतृत्व में बनाई है जिसका प्रथम चरण उत्तराखण्ड राज्य से आरम्भ होगा।

प्रचार यात्रा में सुयोग्य संन्यासियों, वानप्रस्थियों द्वारा सोई हुई जनता को जागृत कर सत्य वैदिक धर्म के मार्ग पर चलने को प्रोत्साहित किया जायेगा।

जो संन्यासी, वानप्रस्थी यात्रा में जाने के इच्छुक हों वे अतिशीघ्र अपना नाम यात्रा संयोजक स्वामी सोम्यानन्द जी को मो.:–0–9868720739 पर सूचित कर दें क्योंकि यात्रियों की संख्या 40 सीमित है।

जो संन्यासी, वानप्रस्थी अपना नाम लिखा चुके हैं वे 22 मई, 2013 की शाम 5.00 बजे तक सार्वदेशिक सभा, ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 पर अवश्य पहुँच जायें।

इस शुभ वेद प्रचार यज्ञ में दानी पाठकगण अपनी दान राशि वैदिक विरक्त मण्डल, नई दिल्ली के नाम अति शीघ्र भेजकर सूचित करें और पुण्य लाभ पायें।

निवेदक

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती	स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती	स्वामी प्रणवानन्द	स्वामी आर्यवेश
अध्यक्ष	कार्यकारी अध्यक्ष	कोषाध्यक्ष	महामन्त्री

अंधविश्वास, रूढ़िवाद, अवतारवाद एवं पाखण्ड के खिलाफ

महर्षि दयानंद की सिंह गर्जना - सत्यार्थप्रकाश का

11 वां समुल्लास

मंगाये, पढ़े, पढ़वायें, बाटें, भेंट करें

मात्र 20 रुपये सहयोग राशि

50 या अधिक प्रतियाँ मंगाने पर 20 प्रतिशत छूट

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली - 110002

दूरभाष :- 011-23274771, 23260985

पुनर्विवाह रिश्तों की नई शुरूआत

पुनर्विवाह में अपने बच्चों को समझना और समझाना जितना जरूरी होता है उतना ही जरूरी होता है अपने नए जीवन साथी के बच्चों के साथ अपने संबंधों को प्यार भरा रखना। बिना कोई पूर्वाग्रह पाले आप अगर प्यार से ईमानदारी भरी पहल करेंगी तो यकीनन सभी इस नए रिश्ते को खुले मन से स्वीकार करेंगे।

छह साल पहले रीटा का तलाक हो गया था। उसके दो जवान बेटे हैं। कुछ साल पहले अभय के साथ उसका रिलेशनशिप शुरू हुआ। अभय भी तलाकशुदा ही है। अब वे दोनों शादी करने की योजना बना रहे हैं लेकिन उसके बेटों के दिल में अभय के लिए बेहद गुस्सा है, जो रीटा की चिंता का कारण है। दूसरी तरफ अभय रीटा के पेरैंटिंग स्टाइल की खुल कर आलोचना करता है। वह महसूस करता है कि रीटा अपने दोनों बेटों को बिगाड़ रही है और जब भी वह उससे बात करती है तो उसे ऐसा महसूस होता है जैसे कि वह कोई दुष्ट सौतेला बाप है। रीटा और अभय की ही तरह कई तलाकशुदा, सिंगल या विधवा, विधुर पेरैंट्स जब नया परिवार बनाना चाहते हैं तब इस दिशा में कोई भी कदम उठाने से पहले उनके मन में बहुत घबराहट होती है। रीटा कहती है, ''मैं अपनी जिंदगी अभय के साथ बिताना चाहती हूं पर मैं अपने बच्चों की जिंदगी बिगाड़ना नहीं चाहती।' इसमें कोई शक नहीं है कि चुनौतियां बहुत मुश्किल हैं, पर यकीनन कुछ भी असंभव नहीं है।

जब दो परिवार मिल कर एक परिवार बनता है, तो बहुत–सी परेशानियों और समस्याओं से दो–चार होना पड़ता है। बच्चे अपने लिए नई मां या पापा आसानी से स्वीकार नहीं कर पाते। अपने पेरैंट की जगह किसी दूसरे को देना उनके मासूम और भावुक मन के लिए कभी भी इतना आसान नहीं होता, जबकि आपके लिए भी जिंदगी में आगे बढ़ना और अपने लिए जीवन साथी का साथ जरूरी होता है।

ऐसे में जरूरी है कि बच्चों के साथ आपका कम्यूनिकेशन गैप न रहे और उनके साथ आप खुल कर सब बात कर सकें। आप भी अगर दो परिवार मिल कर एक होना चाहते हैं तो आपको अपने लैवल पर कुछ कोशिशें जरूर करनी होंगी। सबसे महत्वपूर्ण है कि पहले आप अपने बच्चों के साथ बैठ कर उन समस्याओं के बारे में बात करें जो आपको नया परिवार बनाने के बाद पेश आ सकती हैं।

आप खुल कर सभी पहलुओं पर बात करें और यह ध्यान दें कि बच्चे आपकी बात को अच्छी तरह सुनें और समझें भी। हो सकता है कि शुरू में वे आपको कुछ ऐसी कड़वी और तीखी बातें सुनाएं, जो आपको अच्छी न लगें लेकिन आपको बिना गुस्सा किए शांत मन से उनकी बात सुननी चाहिए।

संयम रखें, एक बार जब वे महसूस करने लगेंगे कि आप उनका नजरिया भी समझने लगे हैं तो उनके लिए इस नई व्यवस्था को स्वीकार करना आसान हो जाएगा। बदलाव को स्वीकार करने में हो सकता है कि बच्चे उससे ज्यादा समय लें जितना कि आप सोचते हैं।

यह भी हो सकता है कि उन्हें ऐसा महसूस हो कि आपने उनकी मर्जी के बगैर ही यह फैसला ले लिया है। अपने बच्चों को विश्वास दिलाएं कि हालांकि आप शादी करने जा रही हैं, पर उनके लिए आपके दिल में प्यार कभी कम नहीं होगा। उनके साथ आपका रिश्ता शादी के बाद भी वैसा ही रहेगा।

ध्यान रखें शादी के बाद शुरू–शुरू में अपने बच्चों को थोड़ा ज्यादा समय दें। उनके साथ कुछ समय अकेले बिताएं। वह समय खासतौर पर उनके ही लिए हो। उन्हें बाहर घुमाने ले जाएं, उनके साथ बात करें, उन्हें शॉपिंग पर ले जाएं। धीरे–धीरे जिंदगी की गाड़ी पटरी पर आ जाती है, तब सब ठीक हो जाएगा।

अपने पार्टनर के बच्चों के साथ धीरे–धीरे नजदीकी बढ़ाने की कोशिश करें। आपको उन्हें और उन्हें आपको समझने में समय लगेगा। एकदम से उनके मां या पापा बनने की कोशिश न करें। प्यार और विश्वास कायम होने में समय लगता है। आपके पार्टनर को भी समझना चाहिए कि सिर्फ आपके साथ रिश्ता रखने भर से ही आप उसके बच्चों के पेरैंट नहीं बन सकते।

कई बार ऐसे भी मौके आएंगे जब वह आपके पेरैंटिंग स्टाइल से सहमत नहीं होगा लेकिन सबसे बढिया यही रहेगा कि शुरूआती दौर में आप हमेशा नम्र रुख अख्तियार करें। आप दोनों के भी नए टिपिकल ब्याहता जोड़े की तरह कुछ रोमांटिक पल अकेले बिताने या हनीमून पर जाने के सपने हो सकते हैं, पर आपको ऐसे कुछ सपनों को अपने बच्चों के लिए छोड़ना पड़ेगा। आपको सब कुछ इस तरह से मैनेज करना पड़ेगा कि परिवार का कोई भी शख्स खुद को उपेक्षित या नजरअंदाज अनुभव न करे।

– मीनाक्षी गांधी, (पंजाब केसरी से साभार)

भजन

टेक : हे प्रभु! अपनी भक्ती का,
अधिकार हमें नित दीजे।
हम मानव हैं श्रेष्ठ आर्य,
संस्कार हमें नित दीजे।

(1)
संकट की घड़ियों में भी हम,
मुसकाना ना छोड़ें।
तेरा यश गाते नित जायें,
अफ़साना ना छोड़ें।
भव–सागर से पार लंघा,
पतवार हमें नित दीजे।

(2)
यज्ञ श्रेष्ठतम् कर्म कहा है,
यज्ञ किये ही जाना।
सहानुभूति सबसे रक्खें हम,
मन में प्रीत निभाना।
कभी किसी से घृणा द्वेष ना,
प्यार हमें नित दीजे।

(3)
मानुष योनि श्रेष्ठ हमारी,
हमें मनुष्य बना दो।
कभी मनुजता ना छोड़ें हम,
वह पहचान करा दो।
अच्छे गुण वाले सुरभित,
साभार हमें नित कीजे।

(4)
जहाँ राष्ट्र में जन्म लिया
उसके हित–चिन्तन अपना।
कर्म करें, पुरुषार्थ करें,
हो सुख–संवर्द्धन अपना।
जीना हमको आ जाये,
सुख–सार हमें नित दीजे।

– बाबूराम शर्मा विभाकर
52/2, लाल क्वार्टर्स, गाजियाबाद

क्यों पिएं आम का पना

गर्मियां आ चुकी हैं सादे पानी से आप तपती हीट को बीट नहीं कर सकते। ऐसे में एक चीज है जो आपको न केवल गर्मी से बचाएगी बल्कि सेहत भी बनाएगी। यह है आम पना। यह कच्चे आमों और चीनी से बनाया जाता है। अपने स्वाद के अनुसार इसे बिना चीनी के सिर्फ नमक और हल्का जीरा आदि डालकर भी ले सकते हैं। यह हैं पांच कारण आम पना पीने के।

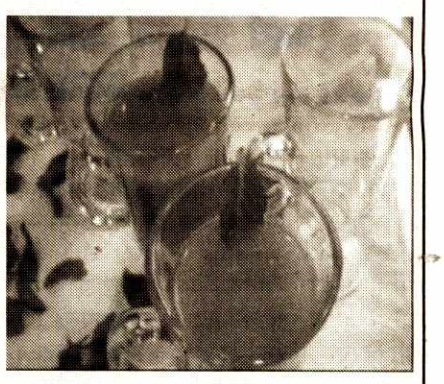

1 यह बहुत टेस्टी होता है और हार्ट अटैक के खतरे से बचाता है।
2 पसीने के माध्यम से निकलने वाले सोडियम और जिंक को वापस देता है।
3 विटामिन सी इसमें बेहद ज्यादा मात्रा में पाया जाता है जो आपके ब्लड डिसऑर्डर से बचाता है।
4 टीबी, एनीमिया, हैजा जैसी बीमारी में यह टॉनिक का काम करता है।
5 आम पना ब्लड सेल्स को फ्लेक्सिबल बनाता है और नए ब्लड सेल्स बनाने में मदद करता है।

पृष्ठ–1 का शेष

जन–जागरण से समाप्त होगा राजनीतिक भ्रष्टाचार

स्वामी जी ने कहा कि सम्पूर्ण क्रान्ति के प्रणेता लोक नायक जयप्रकाश नारायण की यह जन्म भूमि एक पुण्य भूमि है यहाँ जिस किसी भी अभियान की शुरुआत होती है निश्चित ही वह अभियान अपने मुकाम तक पहुँचता है। जे. पी. गाँधी तथा लोहिया का भारत बनाने के लिए उनके पदचिन्हों पर चलना आज सभी का नैतिक कर्त्तव्य है। उन्होंने कहा कि विश्व मानव जागरण मंच के अन्तर्गत प्रजातन्त्र की रक्षा लोकतन्त्र की रक्षा सामाजिक कुरीतियों का खात्मा, नारी सम्मान व भ्रष्टाचार तथा नशा मुक्त भारत बनाने के उद्देश्य से इस अभियान की शुरुआत की गई है। इस अवसर पर उपस्थित हजारों श्रोताओं को दोनों हाथ उठाकर स्वामी जी ने संकल्प दिलवाया कि देश हित में अपनी अहम भूमिका निभायेंगे। स्वामी जी ने कहा कि देश में आसमान छूती मंहगाई, भ्रष्टाचार और मासूम बच्चियों के साथ दुष्कर्म की बढ़ती घटनाओं से जनमानस में उबाल है सरकार बिल्कुल निकम्मी साबित हो रही है इसलिए जनता के सामने एक मात्र रास्ता है जन–जागरण। अतः आप सब उठ खड़े हों और एक जुट होकर हमारा सहयोग करें। उन्होंने कहा कि यह यात्रा जन–जागरण करते हुए 16 मई को शिवहर तक पहुँचेगी तथा जगह–जगह लोगों के बीच जन–जागरण किया जायेगा।

इससे पूर्व स्वामी जी अपनी टीम के साथ लाला टोला स्थित जे. पी. ट्रस्ट पर गये तथा उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। इस अवसर पर प्रदेश प्रभारी श्री मनोहर तिवारी, जे. पी. आन्दोलन से जुड़े श्री ओम प्रकाश सिंह, श्री के. के. द्विवेदी, प्रो. वाल्मीकि, श्री अजय वर्मा, डॉ. विजया रानी सिंह, डॉ. राजीव कुमार सिंह, श्री बृजेन्द्र सिन्हा, डॉ. अनिता ने भी विचार प्रकट किये।

NDPSo on 17/18 मई, 2013 वैदिक सार्वदेशिक 16 से 22 मई, 2013
प्रकाशन की तिथि : 16 मई, 2013
पंजीयन संख्या **DELMUL/2005/15488**
डाक पंजीकरण संख्या **DL(c)-01/1213/12-14**
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

करौथा कांड की न्यायिक जाँच हो

— स्वामी अग्निवेश

पानीपत : करौथा (रोहतक) की घटना को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के मंत्री राममोहन राय ने संयुक्त बयान में आर्य समाज के सभी नेता कार्यकर्ताओं से अपील की है कि वे कानून को अपने हाथ में न लें तथा शांति बनाये रखने में सरकार तथा पुलिस प्रशासन का पूरा साथ दें। उन्होंने पुलिस से पूछा कि भीड़ को काबू करने के लिए रबड़ बुलेट्स का प्रयोग क्यों नहीं किया गया। सीधे गोली न चलाकर पैरों में गोली चलाने से भी शायद इतनी जान नहीं जाती। हालत की गंभीरता को देखते हुए पूरे प्रकरण की न्यायिक जाँच होनी चाहिए तथा मृतकों को उचित मुआवजा मिलना चाहिए।

स्वामी जी ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने अपने कटुतम आलोचक को हमेशा मुस्करा कर जवाब दिया। यहाँ तक कि अपने ऊपर आक्रमण करने वालों को भी उन्होंने अभय दान दिया। अंतिम बार उन्हें प्राण घातक जहर देने वाले रसोइये तक को क्षमादान देकर बचाने का प्रयास किया। ऐसे दया के सागर दयानन्द की आलोचना करने वालों के प्रति आर्य समाजी साथी उत्तेजक न बनें तथा कानून को हाथ में न लें। आचार्य बलदेव व उनके कार्यकर्ता संयम से काम लें। राममोहन राय ने कहा कि आर्य समाज ने स्वामी श्रद्धानन्द और पंडित लेखराम तथा महाशय राजपाल आदि की निर्मम हत्या पर भी कभी संयम नहीं त्यागा और विरोधियों के साथ शास्त्रार्थ द्वारा, संवाद द्वारा अथवा कानून द्वारा समाधान किया। आज हमें उसी परम्परा पर चलकर आर्य समाज के उज्ज्वल नाम पर आंच नहीं आने देनी चाहिए। सतलोक आश्रम के भी रामपाल दास को चाहिए कि वे महर्षि दयानन्द तथा सत्यार्थ प्रकाश की आलोचना सभ्यता की सीमा में रहकर करें। आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास तथा योगदान को कम आंकने का प्रयास न करें।

कबीर पंथ के महंत रामपाल जी का आश्रम रोहतक जिले के करौंथा गाँव में है। इन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती पर गलत भाषा में आलोचना करनी शुरू कर दी थी साथ ही यह माना जाता है कि आश्रम में अनैतिक कार्यों की गतिविधियाँ चलती है जिससे न केवल आर्य समाजियों में बल्कि आजू–बाजू के गाँवों के लोग भी यहाँ की गतिविधियों से दुःखी थे और लोगों में काफी रोष भी था। सभी लोग यह चाहते थे कि गलत गतिविधियों के इस आश्रम को बन्द किया जाना चाहिए। उसी बात को लेकर प्रदर्शन कर रहे साथियों तथा पुलिस के बीच और रामपाल दास के साथियों द्वारा की गई गोलीबारी के कारण वहाँ की स्थिति बेकाबू और हिंसक हो गई जिसमें एक महिला समेत तीन व्यक्तियों को जान गंवानी पड़ी है।

प्रतिष

अवितरण की दशा में लौटाएँ–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन,
(रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002

राजस्थान के नवनियुक्त आर्य परिवार के रत्न लोकायुक्त श्री सज्जन सिंह कोठारी शील एवं सौजन्य के प्रतिमान

— डॉ. भवानीलाल भारतीय

राजस्थान के नवनियुक्त लोकायुक्त न्यायमूर्ति सज्जनसिंह कोठारी आर्यों के चिरन्तन आदर्शों की प्रतिमूर्ति हैं। शील, सौजन्य तथा शिष्टाचार गुण सम्पन्न श्री कोठारी जी का जन्म तथा प्रशिक्षण आर्य परम्पराओं के अनुसार हुआ है। अजमेर जिले के अन्तर्गत मसूदा की जमींदारी प्रसिद्ध है। वहाँ के प्रशासन राव बहादुर सिंह के शासन काल में आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द का आगमन 1881 ई. में हुआ था। उस समय स्वामी जी के प्रेरणाप्रद उपदेशों को ग्रहण कर जिन लोगों ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली थी उनमें अनेक जैन परिवार भी थे। इन्हीं में से एक कोठारी परिवार भी था। आपके पिता श्री धर्मसिंह कोठारी की शिक्षा–दीक्षा स्वामी दयानन्द निर्दिष्ट शिक्षा पद्धति से हुई। हिन्दी, संस्कृत आदि के सुचारू ज्ञान के साथ–साथ आपने लाहौर के विख्यात डी. ए. वी. कॉलेज के आयुर्वेद विभाग में उस समय प्रवेश लिया जब महात्मा हंसराज जैसे मनस्वी पुरुष कॉलेज कमेटी के अध्यक्ष थे। आपने ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की संशोधित प्रति तैयार की।

श्री सज्जनसिंह कोठारी इन्हीं धर्मसिंह जी के तृतीय सुपुत्र हैं। आपके अग्रज उच्च शिक्षा विभाग से सेवा निवृत्त हुए हैं। दूसरे भ्राता श्री सुदर्शन व्यवसाय प्रबन्धन से सम्बद्ध रहे। सज्जनसिंह जी की उच्च शिक्षा अजमेर के गवर्नमेंट कॉलेज में हुई जो अपनी परम्पराओं तथा छात्रों के समक्ष उच्च लक्ष्य प्रस्तुत करने के लिए विख्यात है। यह सुखद प्रसंग रहा कि श्री कोठारी बी. ए. तृतीय वर्ष में मेरे भी विद्यार्थी रहे जब मैं उक्त कॉलेज में हिन्दी का प्रवक्ता था।

कानून की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् आपने राजस्थान की न्यायिक सेवा परीक्षा ससम्मान उत्तीर्ण की तथा अजमेर में मजिस्ट्रेट के पद पर नियुक्त हुए। आपकी प्रशासनिक योग्यता, लगन तथा कर्त्तव्य भावना निरन्तर विकसित होती गई और आप उत्तरोत्तर अपने विभाग में उन्नति के उच्चतर स्तरों पर अभिषिक्त होत रहे। कालान्तर में जब आप कोटा में वाहन विभाग में न्यायाधीश पद पर रहे तो वहाँ की सामाजिक प्रवृत्तियों में निरन्तर भाग लेते रहे। उन्हीं दिनों आपसे पुनः सम्पर्क करने का अवसर मिला। राजस्थान के अनेक नगरों में सत्र न्यायाधीश तथा अन्य उच्च पदों पर कार्य करने के पश्चात् आप राजस्थान सचिवालय में विधि तथा न्याय विभाग में सचिव जैसे दायित्व पूर्ण पद पर भी रहे। तत्पश्चात् आप राजस्थान हाई कोर्ट के माननीय न्यायाधीश के पद पर कार्यरत रहे। हाई कोर्ट की जयपुर बेंच में आपका यशस्वी कार्यकाल रहा।

ऐसे समर्पित एवं कर्त्तव्यनिष्ठ व्यक्ति की लोकायुक्त पद पर नियुक्ति राज्य के लिए सर्वथा शुभ तथा मंगलकारक है। आशा है न्यायमूर्ति कोठारी लोकायुक्त के गरिमापूर्ण पद पर रहकर जन सेवा के नये प्रतिमान उपस्थित करेंगे।

— 3/5 शंकर कॉलोनी,
श्रीगंगानगर, राजस्थान

आर्ष गुरुकुल वेद धाम सोरखा सैक्टर–115, नोएडा

प्रवेश सूचना : सत्र 2013

आर्ष गुरुकुल सोरखा नोएडा में कन्याओं के लिए प्रवेश आरम्भ है। सीमित स्थान। कक्षा दो पास से प्रवेश आरम्भ। कक्षा द्वादश तक मान्यता। विषयों के परीक्षण के उपरान्त ही प्रवेश। शिक्षा एवं आवास निःशुल्क, केवल भोजन शुल्क देय। गो दुग्ध की व्यवस्था। प्राकृतिक वातावरण एवं खेल कूद की व्यवस्था। अधिक जानकारी हेतु सम्पर्क करें। — सम्पर्क सूत्र : 0120–2505731, 9871798221

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल नोएडा का भव्य कार्यक्रम
आर्य समाज स्थापना दिवस

आर्य समाज, आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रबन्ध समिति वानप्रस्थाश्रम नोएडा के तत्वावधान में नव संवत्सर सृष्टि संवत् चैत्र शुक्ल प्रतिपदा के उपलक्ष्य में 139वाँ आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया जिसकी नींव महर्षि दयानन्द ने बम्बई में रखी थी। कार्यक्रम का आरम्भ चतुर्वेद शतक पारायण यज्ञ आचार्य डाॅ. जयेन्द्र कुमार जी के ब्रह्मत्व में सम्पन्न किया गया। पूर्णाहुति के अवसर पर ईशान इन्स्टीट्यूट के डॉ. डी. के. गर्ग विशिष्ट अतिथि एवं श्री राजीव परम जी, चेयरमैन (परम इन्डस्ट्रीज) मुख्य अतिथि द्वारा आहुति प्रदान की गई। मुख्य वक्ता के रूप में युवा विद्वान श्री विरेन्द्र विक्रम जी द्वारा आर्य समाज के निर्माण में महर्षि दयानन्द के कार्यों पर प्रकाश डालते हुए आर्य समाज की आवश्यकता पर उनके महत्त्वपूर्ण योगदान की भूरि–भूरि प्रशंसा कर उन्हें भाव पूर्ण स्मरण किया। आर्ष गुरुकुल के ब्रह्मचारियों एवं कन्या गुरुकुल के ब्रह्मचारिणियों ने हिन्दी के साथ–साथ अंग्रेजी में भी ऋषि दयानन्द का यशोगान किया। अतिथियों के स्वागत में ब्रह्मचारियों द्वारा स्वागत गान प्रस्तुत किया गया। मंच संचालन मंत्री श्री विजेन्द्र कठपालिया जी द्वारा किया गया। प्रधान श्री अशोक गुलाटी जी द्वारा उपस्थित जनों का धन्यवाद किया। प्रधान जी द्वारा बताया गया कि आर्य समाज की स्थापना 1875 में युग प्रर्वतक वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द ने बम्बई में किया था तभी से आर्य समाज के हजारों विद्वानों कार्यकर्ता गुरुकुल के स्नातक रात–दिन राष्ट्र रक्षा के कार्य में अपना योगदान देकर सामाजिक कुरीतियों को भगाने का प्रयास कर रहे हैं। आज के परिवेश में आर्य समाज के सिद्वान्तों के प्रचार–प्रसार की महती आवश्यकता है तथा इस ओर हमें अधिक ध्यान देना चाहिए। ताकि ऋषि ऋण चुकाया जा सके।

पधारे हुए अतिथियों को सत्यार्थ प्रकाश एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। शान्ति पाठ के पश्चात् ऋषि लंगर के साथ भव्य कार्यक्रम का समापन हुआ।

— अशोक गुलाटी

प्रो० कैलाशनाथ सिंह, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा सक्सेना आर्ट प्रिंटर्स : सैड-26 ओखला फेस-1, नई दिल्ली-110020 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216) सम्पा. :
प्रो० कैलाशनाथ सिंह (सभा मन्त्री) मो.:0.9415017934 ई-मेल : Sarvadeshik@yahoo.co.in वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।